International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 6.972 Volume 11 Issue 01, Jan 2024
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

दूधनाथ सिंह की कहानियों का वैशिष्ट्य

शोधार्थी –कांता देवी
हिंदी विभाग
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ़, राजस्थान।

निर्देशक –सहायक प्रो0 डॉ0 रचना शर्मा
हिंदी विभाग
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ़, राजस्थान।

शोध सार

दूधनाथ सिंह की कहानियां कथ्यों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। गांवों में पनपता पारस्परिक प्रेम, द्वेष, छुआछुत, नारी शिक्षा के लिए प्रेरित करती कहानियां लेखक की लेखनी का लोहा मनवाने में सक्षम है । कहानी के मुख्य पात्र प्रेम प्रसंग चित्रित नहीं किया गया है । इनकी कहानियों में यथासंभव भाई चारे की भावनाओं को दर्शाया गया है जो कि समय असमय एक दूसरे के प्रति सर्मपित है । क्योंकि गांव का परिदृश्य चित्रित किया गया है तो यह भी आवश्यक है कि गांव में विभिन्न जाति एवं सम्प्रदाय के लोग रहते हैं तो निश्चित रूप में उस आबादी का कुछ प्रतिशत तो मुस्लिम संप्रदाय का भी होगा और जहाँ भिन्न–भिन्न समुदाय के लोग निवास करते है तो वहाँ कुछ न कुछ जातिगत वैमनस्य भी होना लगभग निश्चित ही होगा। सांप्रदायिक दंगो की संभावनाएं भी दर्शायी गई है। हिन्दुओं की होली तथा समाजिक सांस्कृतिक, विवाह संस्कार के गीतों की झलक भी परिलक्षित होती है। कथ्य की दृष्टि से दूधनाथ सिंह की कहानियां अत्यंत उल्लेखनीय हैं। मनोभावों के प्रत्येक कोने को झांक कर लेखक ने देखा है।

मूल शब्द– सांस्कृतिक, विवाह संस्कार, परिलक्षित, अवसाद ग्रस्त, सांप्रदायिक।

पात्र योजना की दृष्टि से दूधनाथ सिंह की कहानियां मील का पत्थर सिद्ध होती हैं। निजी संबंधों से टकराहट कितनी तकलीफदेह होती है इसे दूधनाथ सिंह समझते हैं– उनकी कहानियों के पात्रों की लड़ाई अपने ही लोगों से है, और जैसा कि दूधनाथ सिंह मानते हैं यह लड़ाई व्यक्ति को आहत करती है, एक अवसाद ग्रस्त चुप में बंद कर देती है – उनकी सुखांत कहानी में इसे चुप के भीतर छिपे युद्ध को और अन्तर्द्वन्द्व को बहुत ही संवेदनशील बारीकी और गहरी कलात्मकता के साथ उभारा गया है।'' 1 इस चुप के पीछे, इस एकाएक सपाट और तटस्थ बेचैनी भरी मनःस्थिति के पीछे एक मनोविज्ञान है जिसे दूधनाथ सिंह की सहभागी मर्मी दृष्टि पकड़ लेती है – ... जब निकटतम संबंधों में युद्ध छिड़ता है तो यह विरोध एक नैराष्य और अपरिमित इच्छाहीनता में बदल जाता है क्योंकि निजी अभिशाप के प्रतिकार का अर्थ होता है एक असीमित विघटन जिसके लिए साधारणतः मानव हृदय तैयार नहीं कर पाता, अपने को। ... लेकिन जिनसे हमारा कोई संबंध नहीं होता, उनकी छोटी–सी चुनौती भी हम स्वीकार कर लेते हैं। युद्ध इसी अर्थ में किसी राष्ट्र में ललकार भरता है कि वह हमसे सम्बद्ध न होकर किसी दूसरे के स्वार्थ से संबद्ध होता है। अपनों से युद्ध हमें उत्तेजित नहीं करता, चुप करता है।''2

स्वर्गवासी कहानी एक बेकार आदमी की विकृत मानसिकता का सशक्त चित्रण करती है। वह अपने को सारी सुविधाओं और व्यवस्थाओं में कहीं नहीं पाता है– चरित्र–रहित, नाकारा, शौहदा जैसे विशेषण उसके दिमाग से सदा चिपके रहते हैं – जब, जहां तक आँखें जाती हों – तल्ख लोग और बेहाल दुनिया ही

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

दिखाई देती हो तब आदमी यदि बहुत ही दुःसाहसी और शक्ति सम्पन्न न हो तब तक वह पैरों तले जमीन नहीं पायेगा – ऐसे में बहुत संभव है कि आदमी निठल्लेपन और निर्लिप्तता को ही अपनी नियति मानकर एक दार्शनिक किस्म के सुख में अपने को केन्द्रित कर ले। 'स्वर्गवासी' का वह ऐसे ही नकारेपन को अपनी अंतिम संभावना मान बैठा है– उसने बहुत ही निर्लिप्त तसल्ली से अपने को सारी तकलीफों से अलग कर लिया है – वह सिर्फ, अपने को ही चाहने और अपनी ही चिंता करने की स्वार्थपरता तक पहुंच गया है –बहन के घर में पड़े रहना और अपमान के बोध को बार–बार नजरअंदाज करके वहीं जमे रहना–सारी चिताओं –दुष्चिन्ताओं की पड़े–पड़े जुगाली करते रहना यर्थाथ जीवन स्थितियों से उसके पलायन को जाहिर करता है। यह स्थिति बहुत सी अनजानी कुंठाओं और अस्तित्व संकट के बोध के घतीभूत हो जाने के बाद जन्मी है।''3

बचपन से ही वह अमानवीय और क्रूर किस्म के मजाक कर के खुशी अनुभव करता था –भांजियों के अंगूठे में आत्मिन के टुकड़े चुभाना, कभी उनके मुह में अपने मुंह में भरी पान की पीक उलट देना, बच्चों के पेट पर नाखून से सफेद गहरी लकीरें खींचना, बीड़ी से उनका हाथ जला देना, या उनकी हथेली पर थूक देनाः''4 उसकी ये सारी हरकतें उसके कुंठित और अदना अनुभव करके के बोध का ही परिणाम मानी जा सकती हैं।

प्रेमिका का पति उन दोनों के लिए एक जबरदस्ती चिपके हुए कर्मकाण्ड की तरह था... परम्पराओं की तरह, जिसके होने से एक हलब्बी औरत एक गुमनाम आदमी की और उंगली उठाने के लिए कुछ अपशब्द मिल जाते थे जैसे पत्नी, बीबी, फाहशा, बेवफा, कमीनी, पतिव्रता और अय्याश, लफंगा आदि। यदि वह चिपकी हुई परम्परा मर जाय... मैं कभी कभी सोचता–तो नर–मादाओं की ओर उंगलियां उठाने के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले ये विशेषण नष्ट हो जाये।''[5] स्पष्ट है वह स्त्री पुरूष के दायरों में बंधे संबंधों और उनकी मर्यादा से नफरत करता है– संबंधों की स्थापना यदि व्यक्ति को कुछ जीवंत अनुभव प्रदान करती है तो उनकी सारी खामियां भी, उनके बीच में आने वाले खतरे भी स्वीकार हैं–जीवन्तता और अनुभव की स्वतंत्रता की खातिर ही वह बहुत अर्से के बाद भी अपनी पुरानी प्रेमिका के साथ जाने की एक तीव्र इच्छा को महसूस करता है–यद्यपि इस बीच अतीत के वे सारे जुड़ाव जाने कहां टूट कर गायब हो गए हैं फिर भी शायद वे कुछ जिंदा क्षणों को फिर से पा सकें, इस संभावना की खातिर वे फिर से मिलते हैं। हालांकि अब उम्र का तकाजा है कि अब व्यवस्थाओं और बर्जनाओं से टकराने की न कोई अहमियत बाकी है और न ही प्रतिष्ठाओं को ठुकराने का वह पुराना साहस। लेकिन बावजूद इसके, वह कायर और झूके हुए, आदमी के रूप में अपनी कल्पना नहीं करना चाहता– उसका हठ अमहत्वपूर्ण नहीं है। इसमें चेतना में मिली हुई, स्वतंत्रताओं के लिए टकराने की मनः स्थिति के तेवर अभी शेष है। एक उम्र तक आकर आदमी की छोटी–मोटी प्रतिष्ठाएं इतनी महत्वपूर्ण हो जाती हैं कि वह उन्हें बचाने के लिए बड़ी–बड़ी मजेदार संभावनाओं को भी इंकार कर देता है। इस तरह एक प्रकार की कायरता को वह कवच के रूप में इस्तेमाल करता है। क्या मैं वही कर रहा हूं ? यह विचार आते ही महज चुनौती के रूप में मैनें उसे पुकार लिया था।[6]

उत्सव कहानी भी वर्तमान परिस्थितियों में, विषमताओं के बीच उन्हें भुगतते हुए पांच बेकार युवकों की ऐसी कहानी है जिसमें उन युवकों को लगता है उनकी सारी शक्तियों पर जंग लगता जा रहा है। वे बहुत कुछ करना चाहते हैं, जिससे उन्हें अपनी उपयोगिता और सार्थकता के प्रति विश्वास हो जाए लेकिन खूब गहरी उत्तेजना और रोमांच भरे कार्य ही अब उन्हें तुष्टि दे सकते हैं– कहानीकार एक गहरे 'हयूमर' के साथ उनकी हरकतों का ब्यौरा देता है। महज तेज हलचल और सनसनाहट भरी गहमागहमियां ही आज के आदमी को कहीं कुद होने का अहसास देती हैं– अन्यथा उसे इतनी बड़ी दुनिया में अपना अस्तित्व धीरे–धीरे भरता हुआ – खत्म होता हुआ लगता है। उन सभी को लगा कि स्थिति अब काबू से बाहर हो चुकी है। ऐसे वे कतई नहीं रह सकते पिछले कई दिनों से वे सभी किसी घटना की फिराक में सड़कों पर इधर–उधर घूम रहे थे, वे चिड़चिड़ा रहे थे और उनके चेहरे लटक जाते थे, न कहीं कोई हल्ला–गुल्ला, न गुंडई, न हड़ताल, न चोरी–डकैती, न मारपीट–सेवा का कोई अवसर नहीं, जौहर दिखाने के लिए दुर्घटना, कोई वारदात नहीं, ना उम्मीदी के इस उदास और निहत्थे माहौल में वे और ज्यादा नहीं रह सकते थे। वे बुरी तरह ऊबे, घबराये और उदास थे –उन्हें लगता की उनकी उम्र बेकार बीत रही है। उनकी योग्यताएं व्यर्थ हैं और दरअसल वे किसी काम के नहीं रह गये हैं। [7]

संवाद कहानी के महत्वपूर्ण तत्व हैं। कथानक के विकास और चरित्र विश्लेषण दोनों ही दृष्टिओं से कथोपकथन का विशेष महत्व होता है। प्रभावशाली कथोपकथन ही कहानी को सजीव, स्वाभाविक तथा मनोरंजकता प्रदान करते हैं। उपन्यास में नाटकीय प्रभाव उत्पन्न करने के लिए भी संवाद सहायक होते हैं। ''इन्ही के कारण कहानी में अभिजित नाटक जैसी विशेषता और स्वाभाविकता अपने आप विराजती है ।''8

कथानक के विस्तार तथा विविध घटनाओं में सामंजस्य स्थापित करने में भी संवाद का स्थान महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त पात्रों के अन्तः संर्घष की सटीक व्यन्जना भी संवाद के माध्यम से ही होती है। डा0 टण्डन ने ''उपयुक्तता, अनुकूलता, सम्बंध्द्धता, स्वाभाविकता , संक्षिप्तता और उद्देश्यपूर्णता को अच्छे कथोपकथन का गुण स्वीकार किया है ।''9

किसी भी रचना की संवाद योजना के मुख्यतया तीन उद्देश्य होते हैं।

1. कथावस्तु का विकास करना।
2. पात्रों के चरित्रिक वैशिष्टय को उदघाटित करना।
3. कहानीकार की उद्देश्य प्राप्ति में सहायक होना ।

वस्तुतः संवाद कथानक को गतिशीलता प्रदान करने ,पात्रों के अंत संघर्ष की सटीक अभिव्यंजना करने में महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

उन्हें सूरज की प्रचंडता में कोई दम नहीं दिखाई देता, उन्हें आकाश का होना भी कोई आत्मविष्वास या सांत्वना नहीं देता, लोग उन्हें जिंदा नहीं लगते हैं– दुनिया से उन्हें खौफ – सा होता है– उनकी कविता की शब्दावली में जो तीखा आवेश है वह उनकी स्थितियों के प्रति गहरी और सघन असंतुष्टि और आक्रोष के कारण है। 10 सुबह की लालीमा भी उनकी उत्तेजित मनः स्थिति को शांत नहीं कर पाती है, उन्हें सब ओर अपने ही भीतर जलती आग दिखाई देती है।

दूधनाथ सिंह के लिए गलत के प्रति स्वीकृति अनुचित है। स्थिति चाहे जितनी ही खतरनाक और त्रासदायक क्यों न हो – झुकना; अपने को और भी खत्म कर देना है।

निष्कर्ष

उनकी संवेदनशील समझ देश की राजनीतिक स्वतंत्रता पर एक प्रश्नचिन्ह लगाती है– इस स्वतंत्रता में व्यक्ति की बाकी सभी आजादियों के लिए कहां जगह है ? वैयक्तिक विकास की संभवनाएं यहीं इस स्वतंत्रता की विद्रूपताओं के तले दफन हो जाती हैं। प्रकृति का सारा तथाकथित प्रषंसनीय और नैसर्गिक सौंदर्य भी आज व्यक्ति को शांति नहीं देता है–''[11] उसे उन्मादी और समस्त आवेशों के साथ भी वह अकेला है और परिवेश की विसंगतियों में सांस लेने के लिए विवश। लोगों की सहनशीलता पर उसे दुख होता है– उसका स्वतंत्रता बोध बहुत तीव्र है वह अपने प्रतिकूल सारी स्थितियों को समझता है– पहचानता है और प्रतिक्रिया स्वरूप परेशान हो उठता है लेकिन उसका यह बोध नितांत अकेला है और कुछ भी नही कर सकता है। उसका सारा विद्रोह और क्रोध जड़ताओं के प्रति है।

संदर्भ सूची

1. सूर्यास्त की कंदरा में मेरी घनी बरौनियों में आग लग रही है। अत्याचारों पर दम साथ लेना यहां परिपक्वता का लक्षण है– वही – पृ0 98
2. .'मैं तुम्हें प्यार करता हूं – ज्वराक्रान्त समुद्री बसंत – मैं तुम्हें झेल रहा हूं––। मेरे प्यारे देश। अपनी कविता की तरह। – वही, पृ0 59
3. स्वर्गवासी – कहानी संग्रह – 'सुखांत' – पृ0 17
4. .'शिनाख्त' – सुखांत – पृष्ठ 36
5 वही, पृष्ठ 33
6 .किस तरह लहू की एक–एक बूंद। मुफ्त में तुल सी जाती है। वही, पृ0 56
7 द्रष्टव्य : अपनी शताब्दी के नाम : पृ0 130–132 ('चुनौती या आत्मसर्मपण)
8 स्वर्गवासी – कहानी संग्रह – 'सुखांत' – पृ0 17
9 .'शिनाख्त' – सुखांत – पृष्ठ 36
10 वही, पृष्ठ 39
11 स्वर्गवासी – कहानी संग्रह – 'सुखांत' – पृ0 17